भावना

तेरहवां अंक

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै,
शाखा कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

ओणम की झांकियाँ

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भावना

2022

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै,
शाखा कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

भावना

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै,
शाखा कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

प्रकाशन	:	वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका
प्रकाशक	:	प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, चेन्नै, शाखा कोच्ची
अंक	:	तेरहवां
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्रीमती माधवी पी.

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चेन्नै

संरक्षक

श्री ग्लोयी अगस्टिन

निदेशक(सी एस/जी एस टी) ॥

परामर्शदाता

श्री एस दिलीप कुमार,

उप निदेशक (डीटी) II

संपादक मंडल

श्रीमती श्रीदेवी के वी,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती सिन्धु नायर

हिन्दी अधिकारी

संपादन सहायक

श्री राकेश कुमार कर्दम

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

संदेश

पी. माधवी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै

बड़े ही हर्ष का विषय है कि हमारे शाखा कार्यालय कोच्ची की हिंदी गृह पत्रिका 'भावना' के तेरहवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है । हमारी राजभाषा हिंदी अपने पथ पर निरंतर तीव्रता के साथ अग्रसर हो रही है तथा निरंतर चहुँदिश जनमानस के बीच अपनी पहचान और स्थान बना रही है । मुझे खुशी है कि हमारे शाखा कार्यालय के सभी पदधारी राजभाषा हिंदी को अपनी पूरी निष्ठा से अपना रहे हैं तथा राजभाषा के कार्यान्वयन में अपनी भूमिका का निर्वाह करने में सजग हैं, साथ ही उनकी राजभाषा हिंदी में रुचि उनके लगाव और जुड़ाव का सूचक है । मुझे इस बात की भी खुशी है कि हिंदी गृह पत्रिका 'भावना' अपने पाठकों के बीच एक संयोजक का कार्य करने में सफल होती आ रही है और आशा है कि पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्ववर्ती कार्य को दोहराने में सफल होगा । पत्रिका से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी पदधारी प्रसंशा के पात्र हैं ।

पत्रिका की असीम सफलता की कामना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएं ।

संदेश

ग्लोयी अगस्टिन
निदेशक (सी एस/जी एस टी) II

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'भावना' के तेरहवें अंक के प्रकाशन पर मुझे असीम प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । यह पत्रिका हमारे कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की हमारी राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव,रुचि एवं सच्ची निष्ठा का सूचक है । पत्रिका के इस अंक को भी सफल बनाने के लिए कार्यालय के समस्त पदधारियों ने बड़े ही हर्ष के साथ व आगे बढ़कर अपना-अपना योगदान दिया है, जिसके लिए वे प्रसंशा के पात्र हैं । मैं कामना करता हूँ कि हमारे कार्यालय के सभी पदधारी हमारी गृह पत्रिका 'भावना' के रथ को इसी प्रकार हमेशा आगे बढ़ाते रहेंगे तथा हमारी पत्रिका 'भावना' अपने पाठकों के बीच राजभाषा हिंदी को अधिक से अधिक प्रयोग में लाने के लिए प्रोत्साहन स्रोत के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करने में सफल होगी ।

गृह पत्रिका 'भावना' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

संदेश

एस दिलीप कुमार
उप निदेशक (डी टी) II

मुझे प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालय से हिंदी गृह पत्रिका 'भावना' के तेरहवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है । हिंदी लेखन एवं उच्चारण के स्तर पर सर्वाधिक सहज एवं सरल भाषा का एक रूप तो है ही साथ ही साथ सर्वाधिक बोली जाने वाली एवं सरकारी कामकाज में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा के रूप में भी दिन-प्रतिदिन अपना स्थान सुदृढ़ कर रही है । इसी दिशा में हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'भावना' भी अपनी भूमिका अदा करने का निरंतर प्रयास कर रही है । पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हमारे कार्यालय के सभी पदधारी प्रसंशा के पात्र हैं तथा उनका सहयोग सराहनीय है । आशा करता हूँ कि पत्रिका 'भावना' का यह अंक भी इसके पूर्व में प्रकाशित अंकों की भांति ही अपने पाठकों की रुचि पर खरा उतरे ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

संपादकीय

तेरह की संख्या को कई लोग अशुभसूचक मानते हैं । पर यह संख्या हमारे लिए गौरव का प्रतीक बन गई है । एक छोटी शाखा होने के बावजूद हम हिन्दी का प्रसार करने के लिए अपनी पत्रिका का तेरहवां अंक आपके सम्मुख रख पाएं हैं, यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है । पत्रिका को हम इस मुकाम पर लाकर अपनी राजभाषा के प्रति निष्ठा को प्रकट करना चाहते हैं । न केवल पत्रिका का प्रकाशन, अपितु इस बात के प्रति भी हम कृतार्थ है कि कार्यालय की अन्य गतिविधियों में भी हिन्दी खूब चल पडी है । कार्यालय के पदधारियों का सहयोग एवं अधिकारियों का प्रोत्साहन राजभाषा के कार्य को आगे बढाने के लिए टॉनिक सिद्ध हुई है । इसके अलावा पाठकों का भी प्रोत्साहन हमें मिला है, जिसने पत्रिका के प्रकाशन के कार्य के लिए पुन:-पुन: प्रयास करने के लिए हमें प्रेरित किया है । इस पत्रिका के आगामी अंकों के प्रकाशन के लिए भी हम आपसे सहयोग एवं प्रेरणा की कामना करते हैं ।

जय हिन्द !!!!! जय हिन्दी !!!!

भावना

आपके पत्र- हमारे लिए प्रोत्साहन

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा)
Office of the Director General of Audit (Home, Education)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली -110 002
Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

सं.रा.भा.ज/2-9/प्रशंसा-पत्र/2020-21/196

दिनांक: 23.03.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नई शाखा कोच्ची
गोल्डनजुबिलीरोड, कलूरकोच्ची, कोच्ची-682017

विषय: हिन्दी गृह-पत्रिका "भावना" के बारहवें अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र।

कृपया आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 15.01.2021 का संदर्भ में जिसके द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में गृह-पत्रिका "भावना" के बारहवें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, प्रेरक प्रसंग आदि पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाएं उच्च स्तर की है। इसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी विषयों में रचनाएं बहुत ही सुंदर तरीके से प्रस्तुत हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। साहित्य की सभी विधाओं में समरसता तथा प्रवीणता को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका में सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। इस उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। इस पत्रिका में वर्णित सभी तथ्य बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (ले एवं हक)
तमिलनाडु, चेन्नई-18
टेलीफोन: 044-24324530 फैक्स: 044-24320562
Website : www.agae.tn.nic.in

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, CHENNAI-18
Phone: 044-24324530 Fax: 044-24320562
Website : www.agae.tn.nic.in

हिन्दी कक्ष/हिन्दी गृह पत्रिका रिव्यू/ 54/2666

दिनांक 19/01/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
चेन्नई, शाखा कार्यालय कोच्ची,
एजी ऑफिस कॉम्प्लेक्स, इरनाकुलम गोल्डन जुबिली रोड, कलूर पीओ, इरनाकुलम 682017

Senior Audit Officer/Hindi Cell
Office of the Director General of Audi (Central) Chennai, Kochi Branch Office
AG'S office complex
Ernakulam Golden Jubilee Road,
Kaloor PO., Ernakulam 682017

विषय : आपकी हिंदी गृह पत्रिका 'भावना' की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'भावना' का बारह वाँ अंक प्राप्त हुआ इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। ये अंक अपने कलेवर, साज- सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं संग्रहणीय है। इस अंक में प्रकाशित आलेख, कविताएं, कहानियाँ, संस्मरण आदि अत्यंत स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सुश्री सुर्यप्रिया पी.द्वारा लिखित कविता 'जिंदगी की दौड़' अत्यंत ही प्रशंसनीय है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रकम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(सुभाष चंद्र यादव)
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
29 JAN 2021

महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENER
BRANCH OFFICE
दूरभाष सं./Tel. No. : 022-22054022 / 022-22057
ई-मेल/E-mail: agcommauMaha

प्रशासन/लेप-III/हिन्दी पत्रिका/फा 576/ 478

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा/हिन्दी कक्ष
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय
चेन्नई, शाखा कार्यालय कोच्चि
महालेखाकार का कार्यालय परिसर
एरनाकुलम गोल्डन जुबिली रोड
कलूर पी ओ,
एरनाकुलम-682017

विषय: हिन्दी पत्रिका "भावना" के 12वें अंक की प्राप्ति

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "भावना" के 12वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। केरल के मानचित्र से सुसज्जित पत्रिका का मुखपृष्ठ अनूठा है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ जैसे हाइपरटून,मुन्नार की यात्रा, कहाँ गई वो मुस्कान, केरल में बरसात: एक भावात्मक प्रतिक्रिया,उत्सव मेरे बचपन की यादें, विक्ययापी महामारी(पेंडेमिक)-इतिहास कारण और प्रभाव तथा चिंपनी की चीख लेख एवं एक पक्षी ज्नुलुक गगन में, झगड़ा है तो बात करो तथा जब जान वतन पर फिदा हुई कविताएँ अत्यंत प्रशंसनीय है। कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतविधियों जैसे हिन्दी पखवाड़ा 2019 की झलकियाँ बहुत सुंदर है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

(आर बी कपडे)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

प्रतिष्ठा भवन, तल मंजिल, 101, महर्षि कर्वे मार्ग, मुंबई-400 020 PRATISHTHA BHAVAN, GR. FLOOR, 101, M.K. ROAD, MUMBAI - 400 020

ाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय
OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), UTTARAKHAND

प्र0/2020-21/विभागीय पत्रिकाएं/पावती/367 दिनांक 05.02.2021

लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष,
ग महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
शाखा कार्यालय कोच्ची।

पत्रिका "भावना" के बारहवें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित "भावना" के बारहवें अंक ई-पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ। तद हेतु धन्यवाद। पत्रिका की सभी रचनाएँ विशेषकर श्री सुमित कुमार की "जब जान वतन पर फिदा हुई", श्री रोहित धामा की "हमारे जीवन में योग का महत्व", सुश्री शोभा वी की "कहाँ गई वो मुस्कान", सुश्री अनिता अरविन्द की "उत्सव मेरी बचपन की यादें" एवं सुश्री सिन्धु नायर की "केरल में बरसात–एक भावनात्मक प्रतिक्रिया" आदि लेख अत्यन्त रुचिकर एवं प्रशंसनीय है।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई एवं पत्रिका की निरन्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी–हिंदी प्रकोष्ठ

"महालेखाकार भवन",कौलागढ़, देहरादून–248195 "Mahalekhakar Bhawan", Kaulagarh, Dehradun: 248195
दूरभाष / Telephone: 2970866, 2970867; फैक्स / Fax: 2970859
Website: agua.cag.gov.in Email: agaeuttarakhand@cag.gov.in

भावना

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL) CHENNAI

सं प्रतिलेख(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2020-21/123

दिनांक: 16.02.2020

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /का.व्या.
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
शाखा कोच्ची, गोल्डन जुबिली रोड,
कलूर, कोच्ची - 682017

विषय : गृह पत्रिका "भावना" के बारहवें अंक (ई-पत्रिका) की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "भावना" के बारहवें अंक (ई-पत्रिका) की ई-प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुखपृष्ठ और आंतरिक साजसज्जा बहुत ही सुंदर है। विशेषतः श्री जयकुमार पी.सी./सहायक द्वारा "दि हायपालूप" भारत के भविष्य का प्रतीक है। श्री के सुब्रह्मण्यम, व.लेप. लिखित पुस्तक की शाखा ' एवं सुश्री सिंधु नायर कृत ' केरल में बरसात-एक मायाजाल प्रतिक्रिया ' प्रकृति से पुनर्मिलन के संदर्भ प्राप्त किए "ईश्वर का देश" का प्रत्यक्ष प्रमाण है एवं केरल के सौंदर्य के जीवंत लेख है। सुश्री मंजू श्री एन कृत - "मैं, तेरे बिन" अथवा हृदयस्पर्शी है। सुश्री सूर्यप्रिया सी द्वारा लिखित "मिलती की दौड़" प्रत्येक दुख के लिए सकारात्मकता का संदेश है। पुरस्कृत सभी प्रतियोगियों को बधाईयां।

पत्रिका के सुन्दर प्रकाशन के लिए सभी स्वागतार्ह एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL) CHENNAI

दिनांक: 21.01.2021

श्री लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्र)
शाखा कार्यालय कार्यालय चौराहा
गोल्डन जुबिली मार्ग, कलूर
कोच्ची, अधिक पर्यायवाचन-682017

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'भावना' के 12 वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

हिंदी गृह पत्रिका 'भावना' के 12 वें अंक की प्राप्ति हुई है, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित लेख रचना एवं शीर्षकवर्णन है। 12 वें अंक के प्रकाशित सीमित मंडल की एक की 'मा-जेर बिन' एवं भी पाठक दृष्टाए की 'आप अनुसर' शीर्षक रचनाएं सराहनीय हैं। पत्रिका के आगामी अंकों के लिए उस कार्यालय से मूलांक शुभ है। पत्रिका में सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के भव्य प्रकाशन के लिए बधाई एवं भविष्य की प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय
श्री लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, उत्तर खंड
भुवनेश्वर-751017 (ओड़िशा)

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2020/24 दिनांक-03.03.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष,
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय,चेन्नै,
शाखा कार्यालय कोच्ची, एर्णाकुलम गोल्डन जुबली रोड,
एर्णाकुलम-682017

विषय- हिंदी गृह ई-पत्रिका **"भावना"** के **12वें** अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह ई-पत्रिका **"भावना"** का **12वाँ** अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ हमारे विचार से प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री सुरेन्द्र कुमार ,लेखापरीक्षक	एक पंछी उन्मुक्त गगन में
2.	श्री पवन कुमार, आशुलिपिक	आत्म अनुभव

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
(दीपक कुमार दास)
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा

Mokokchokar Bhawan, Janpath, Jaipur-302005
Phone/ऑफ - 0141-2385431-39
E-mail : hrpdcalmedabad@cag.gov.in

भारतीय लेखा तथा लेखा-परीक्षा विभाग
महा निदेशक, लेखा-परीक्षा का कार्यालय, केन्द्रीय, कोलकाता

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT, CENTRAL, KOLKATA.

पत्र सं.-राजभाषा/वी/32/खण्ड-III/83
दिनांक: 28-01-2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
चैन्नै, शाखा कोच्ची
पिन - 682017

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'भावना' के 12वें अंक की प्राप्ति।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा ई-पत्रिका के रूप में प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका 'भावना' का 12वाँ अंक प्राप्त हुआ।

पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ अत्यंत सुपाठ्य, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। ये सभी रचनाएँ अत्यंत रुचिकर तथा प्रासंगिक भी हैं।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी (राजभाषा)

कि. आई. प्रेस बिल्डिंग, 8 किरण शंकर राय रोड (1म मंजिल), कोलकाता-700001
Govt. of India Press Building, 8, Kiran Sankar Roy Road, Kolkata- 700001
Phone : 2254-0021, (Gram ACCOUNTCENT) POST BOX: 2986, Fax No.: 033 22135377

सेवा में,
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
चेन्नई, शाखा – कोच्ची-682017

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "भावना" के बारहवें अंक की प्रतिक्रिया प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका "भावना" के बारहवें अंक की प्राप्ति हुई, अतः आपको बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ सराहनीय एवं बोधगम्य हैं, जिनमें मौलिक सोच एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति समाहित हैं। पत्रिका में पृष्ठों की सुघटता तथा छाया चित्र प्रशंसा के योग्य हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को पुनः बधाई एवं इसकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर रखें।

भवदीय,
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

Phone:0141-2385431-39 Fax.:91-0141-2385230 E-mail : agsoRajasthan2@cag.gov.in

अनुक्रमणिका

1	हिंदी लेखन में प्रयुक्त विरामादि चिह्न	शंकर मेहरवाल, डीईओ
2	ऐ जिंदगी मुझे मेरा वो बचपन लौटा दे ।	सुरेंद्र कुमार,ले.प
3	अकेली	अखिता सुनिल
4	ग्लोबल वॉर्मिंग	के ज्योति
5	सुभाष चंद्र बोस	श्रीकांत जी.
6	तरणी	राकेश कुमार कर्दम
7	मेरी पहली चुनावी ड्यूटी	नवीन ए मेनन
8	शं नो वरुण:	राजेश सुरेन्द्रन
9	जागृति	वी एम मंजू
10	सुंदरता केवल देखने वाले की आंखों में नहीं होती है	शोभा बी
11	भावना	विनीता कुमारी साह
12	खुलकर जीने की चाह	उदित एस
13	पेड़ हमारे सच्चे साथी	राकेश कुमार कर्दम,
14	*हिन्दी सप्ताह -2021- रिपोर्ट*	
15	*प्रशासनिक शब्दावली- वाक्यांश एवं अभ्युक्तियां*	
16	*किताबों की मोहक दुनिया*	सिन्धु नायर
17	*एहसास*	रघुराम वारियर

हिंदी लेखन में प्रयुक्त विरामादि चिह्न

वर्ण जब शब्दों की यात्रा करते हुए वाक्य के मुकाम पर पहुँचते हैं तो अर्थ-संप्रेषण की दृष्टि से कई जगह विराम की आवश्यकता पड़ सकती है ; इसी के लिए हैं विराम चिह्न । वर्तमान में पूर्ण विराम (।) के अलावा हिंदी भाषा में कई और तरह के विराम चिह्नों का भी खूब प्रयोग हो रहा है । यहाँ विराम और विराम से इतर दोनों ही प्रकार के चिह्नों का विवेचन उदाहरण सहित प्रस्तुत किया जा रहा है ।

पूर्ण विराम (।)

- वाक्य के अंत होने की सूचना । जैसे – श्याम पढ़ता है ।
- अप्रत्यक्ष प्रश्न के अंत में । जैसे – आपने बताया नहीं कि आप कहाँ जा रहे हो ।

प्रश्न चिह्न (?)

- प्रश्न वाचक वाक्यों के अंत में । जैसे – वह कहाँ रहता है ?
- यदि एक वाक्य में कई प्रश्नवाचक उपवाक्य हों तो पूरे वाक्य के समाप्त होने पर सबसे अंत में । जैसे – मैं क्या करता हूँ,मैं कहाँ-कहाँ जाता हूँ,कहाँ क्या खाता हूँ,यह सब जानने के आप इच्छुक क्यों हैं ?
- प्रश्नवाचक मुहावरे के अंत में । जैसे – जंगल में मोर नाचा किसने देखा ?

अपूर्ण विराम/उप विराम (:)

- सामान्यत: इसका प्रयोग आगे आने वाली सूची आदि के पूर्व किया जाता है । जैसे – महत्वाकांक्षी के तीन शत्रु हैं : आलस्य,हीन-भावना एवं पराश्रय ।
- संख्याओं में अनुपात प्रदर्शित करने के लिए । जैसे – 1:2, 5:6
- स्थान,समय की सूचना के लिए । जैसे – स्थान : सभा कक्ष,समय : चार बजे

अर्ध विराम (;)

- छोटे – छोटे दो से अधिक वाक्यों की श्रृंखला में ; जो एक ही वाक्य पर आश्रित हों । जैसे – विद्या विनय से आती है ; विनय से पात्रता ; पात्रता से धन ; धन से धर्म और धर्म से सुख की

प्राप्ति होती है

- समुच्य बोधकों से बने उपवाक्यों को पृथक करने के लिए । जैसे -आपने उसकी निंदा की ; अतएव वह आपका दुश्मन ही बनेगा ।
- अंकों का विवरण देने में । जैसे – भारत -210; नेपाल – 188 ; जापान – 205

अल्प विराम (,)

- वाक्य, वाक्यांश में तीन या उससे अधिक शब्दों को अलग करने के लिए । जैसे – दिल्ली,मुम्बई,कोलकाता और चेन्नै भारत के बड़े नगर हैं ।
- वाक्य के मध्य में किसी क्षिप्त वाक्यांश अथवा उपवाक्य को अलग करने के लिए । जैसे – गणित का पाठ्यक्रम बदल जाने से, मैं समझता हूँ, इस वर्ष हायर सैकेंडरी का परीक्षाफल प्रभावित होगा ।
- सकारात्मक और नकारात्मक शब्दों में "हाँ" या "नहीं" के बाद । जैसे – हाँ, मैं तो जरूर आऊंगा । नहीं, मैं नहीं आऊंगा ।
- उद्धरण से पूर्व । जैसे – हरिमोहन ने कहा,"मैं इस बार चुनाव में खड़ा हो रहा हूँ ।"
- तारीख के बाद माह का नाम लिखने के लिए । जैसे – 15 अगस्त,1947 को भारत स्वतंत्र हुआ ।
- पत्र में संबोधन के बाद । जैसे – महोदय,

ऊर्ध्व अल्पविराम(')

- अंग्रेजी में यह चिह्न संबंधकारक का सूचक है, लेकिन हिंदी में तो यह चिह्न मात्र अंक लोप का ही सूचक है । जैसे – सन् '47 से सन् '50 तक यानि कि सन् 1947 से सन् 1950 तक । निर्देशक चिह्न (–)
- निर्देशक चिह्न (–) का आकार योजक चिह्न (-) से अधिक लंबा होता है । इसको रेखिका भी कहते हैं ।
- किसी व्यक्ति के वाक्य को उद्धृत करने से पहले । अध्यापक – भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे ?

- कहना,लिखना,बोलना,बताना आदि क्रियाओं के बाद । कमला ले कहा – मैं कल चली जाऊँगी ।
- निम्नलिखित आदि शब्दों के साथ । नाम निम्नलिखित हैं – मोहन,सोहन,राम
- किसी अवतरण के बाद और उसके लेखक/वक्ता से पहले । स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है – बाल गंगाधर तिलक
- संख्याओं,सन् या दो नामों के बीच इसका प्रयोग किया जाता है, तब इसका अर्थ होता है – 'अमुक' से 'अमुक' तक । पृष्ठ 40 –50 तक यानी कि पृष्ठ 40 से 50 तक ।
- 'कि' के स्थान पर । हरि ने कहा – तो तू क्या समझती है, मैं बूढ़ा हो गया ?

विवरण चिह्न (:–)

- यह चिह्न उपविराम तथा निर्देशक चिह्न का मिश्रित रूप है । अत: इन दोनों के अलग-अलग चिह्नों के स्थान पर वैकल्पिक रूप में इस चिह्न का प्रयोग भी प्राय: किया जाता है । जैसे – किसी एक कवि का जीवन परिचय लिखिए : – 1. तुलसीदास 2. कबीरदास 3. सेनापति

उद्हरण चिह्न (“ ”)

- किसी का कहा ज्यों का त्यों उद्धृत करते समय,नाटकों में संवाद के साथ तथा किसी सिद्धांत वाक्य अथवा लोकोक्ति के साथ इस चिह्न के प्रयोग की प्रथा है । जैसे – सुभाष चंद्र बोस ने कहा था, “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा ।”
- यवन – क्यों, “ गंधार नरेश ने तुम्हें क्या आज्ञा दी है ?”
- “ मां फलेषु कदाचिन”

शब्द चिह्न (' ')

- किसी पुस्तक, व्यक्ति आदि के नाम को एक कॉमा/ अल्पविराम जैसे उद्धरण चिह्न में रखा जाता है । जैसे – 'बालभारती' बच्चों की पत्रिका है ।
- किसी शब्द / पद को पृथक रूप से उभारने के लिए । जैसे – “ वह अच्छा लड़का है ।” इस वाक्य में 'अच्छा' शब्द ‘ लड़के ’ की विशेषता बता रहा है ।

- व्याख्या के लिए । जैसे – इस भाषा का नाम ‘ संस्कृत ’ पड़ा, जिसका शाब्दिक अर्थ है ‘सुधरा हुआ’ ।

लोप चिह्न (...)

- लोप चिह्न मुख्य रूप से तीन छोटे-छोटे बिंदुओं से प्रदर्शित किया जाता है । जब किसी शब्द को जानबूझकर प्रयोग न करना हो या तत्काल याद न आ रहा हो तो लोप चिह्न प्रयुक्त होता है और जब बात छूटी हुई हो तो तीन-तीन बिंदुओं को कई बार लगाया जाता है । जैसे – यदि आप...चाहें... ... ... तो

संक्षेप सूचक चिह्न (.)

- संक्षिप्ति बिंदु(.) का प्रयोग शून्य (0) की भांति ही होता है । जैसे – एम.ए. से.मी. कि.ग्रा. इत्यादि ।

योजक चिह्न (-)

- द्वंद समास के बीच में । जैसे – माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी आदि ।
- दो समानार्थी शब्दों की पुनरुक्ति के बीच में । जैसे – घर-घर,रोम-रोम आदि ।
- दो परस्पर विलोम शब्दों के बीच में । जैसे – रात-दिन, उठना-बैठना आदि ।
- साम्य सूचक सा,से,सी, से पूर्व में । जैसे – छोटा-सा, मुझ-सा आदि
- तत्पुरुष समास में समस्तपद से भ्रांति की संभावना होने पर । जैसे – भू-तत्व ।

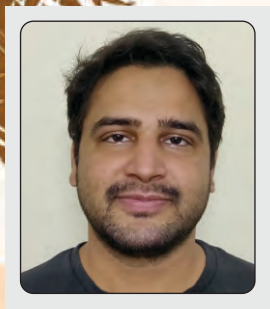

शंकर मेहरवाल
डीईओ

ऐ जिंदगी मुझे मेरा वो बचपन लौटा दे ।

ये लाखों की दौलत तू ही रख ले
वो एक रुपये का स्वाद चखा दे,
गलियों में दौड़ूँ बेफिक्रा फिर से
ऐ जिंदगी मुझे मेरा वो बचपन लौटा दे ।

बापू की उंगली पकड़ मजे करूँ
दादा के काँधे बैठ वो मेला दिखा दे,
मेरी माँ की गोद में चैन की नींद सुला दे
ऐ जिंदगी मुझे मेरा वो बचपन लौटा दे ।

सीख चुका हूँ बहुत कुछ अब
बचपन वाले तू पाठ याद करवा दे,
सुकून के दो पल मिले और जी लूँ तुझे
हाथों से गमों की सब लकीरें मिटा दे,
एक गुजारिश है तुझसे ऐ जिंदगी
मेरा हँसता-खेलता वो बचपन लौटा दे ।

सुरेंद्र कुमार
ले.प.

अकेली

अकेली हूँ कोई नहीं है मेरा
एक बंद कमरे में हूँ मैं,
अकेली हूँ कोई भी दोस्त नहीं है ।
अकेलापन बढ़ रहा है,
मेरा अकेलापन कोई दूर कर दो
मेरे घर में कोई भी दरवाजा,
नहीं खटखटाता है ।
मुझसे बोलने के लिए भी कोई नहीं है ।
मैं हर-दिन बाहर देखती रहती हूँ ।
वहाँ सारे लोग आते-जाते हैं ।
लेकिन मैं अभी भी अकेली हूँ ।
पता नहीं मैं कब तक अकेली रहूँगी,
लेकिन मुझे तो जीना है ।

इसलिए मैं अकेलेपन से लड़ती रहूँगी ।
मैं विश्वास करती हूँ कि मेरा-
अकेलापन एक दिन जरूर दूर हो जाएगा ।
और मेरे भी बहुत सारे दोस्त होंगे —
मैं उस दिन के इंतजार मैं रहूँगी ।

अखिता सुनिल
सुपुत्री श्री सुनिल पॉल,
सहायक पर्यवेक्षक

ग्लोबल वॉर्मिंग

पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और इस प्रक्रिया के लिए मानव आंशिक रूप से दोषी है । ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण, प्रभाव और जटिलताओं को समझना और उसके समाधान हेतु कदम उठाना आवश्यक है क्योंकि इस ग्रह का स्वास्थ्य और मानवजाति का भविष्य इस पर निर्भर है ।

ग्लोबल वॉर्मिंग का तात्पर्य पृथ्वी के समग्र तापमान का दीघ्रकालिक रूप से बढ़ना है जो लंबे समय से चल रहा है । पिछले सौ वर्षों में जीवाश्म ईंधन (Fossil Fuels) के जलने से इसकी गति में काफी वृद्धि हुई है । इन ईंधनों के जलने से वायुमंडल में ग्रीनहाउस प्रभाव हुआ है । जब सूर्य की किरणें वायुमंडल में प्रवेश करती हैं तो इससे उत्पन्न गर्मी सतह से परावर्तित हो जाती है किंतु वापस अंतरिक्ष में नहीं जाती है । जीवाश्म ईंधन के जलने से उत्पन्न गैस, गर्मी को वायुमंडल से बाहर निकलने से रोकती है । यह ग्रीनहाउस गैस – कार्बन डाईऑक्साइड,क्लोरो फ्लूरो कार्बन (chlorofluorocarbon) ,मीथेन,नाइट्रस ऑक्साइड आदि हैं ।

ग्लोबल वॉर्मिंग से जुड़ा एक अन्य मुद्दा 'जलवायु परिवर्तन' है । इसके परिणामस्वरूप दुनियाभर में मौसम में बदलाव नजर आ रहे हैं । इससे गर्म समुद्रों का विस्तार और बर्फ की चादरों और हिमनदों (Glaciers) के पिघलने से समुद्र स्तर में वृद्धि हो रही है जो ब्यापक बाढ़ और अतिविषम मौसम का रूप धरकर पृथ्वी पर जीवन के लिए गंभीर खतरा बन गया है ।

ग्लोबल वॉर्मिंग के मानव निर्मित एवं प्राकृतिक दोनों कारण हैं । मानव निर्मित कारणों में वनों की कटाई,वाहनों का अधिक उपयोग,घरों में एयर कंडीशनर,रेफ्रिजिरेटर जैसे क्लोरो फ्लूरो कार्बन उत्सर्जन करने वाले उपकरणों का उपयोग,कृषि की अधिकता के कारण भूमि की सतह में परिवर्तन, जीवाश्म का दहन,बढ़ती आबादी और प्राकृतिक कारणों में ज्वालामुखी विस्फोट, प्राकृतिक जंगल आग तथा हिमनदों का पिघलना हैं ।

एक अध्ययन के अनुसार ग्लोबल वॉर्मिंग के प्रभाव से इस सदी में दुनिया के पचास प्रतिशत जानवरों और पेड़-पौधों की प्रजातियाँ खत्म हो जाएँगी । ग्लोबल वॉर्मिंग के सामाजिक,आर्थिक तथा स्वास्थ्य संबंधी प्रभाव भी हैं । ग्लोबल वॉर्मिंग की प्रक्रिया इसी तरह चलती रही तो इसके भयंकर परिणाम होंगे । तापमान में वृद्धि से जल की गंभीर समस्या होगी । सूखे की वजह से गर्मी की लहरें उठेंगी और रेगिस्तान जैसे शुष्क जलवायु क्षेत्रों का विस्तार होगा । इसके कारण कई प्रजातियाँ विलुप्त होंगी और पारिस्थितिक विविधता कम होगी । पानी में कार्बन डाईऑक्साइड की उच्च मात्रा से मूल्यवान प्राकृतिक संसाधनों की क्षति होगी । समुद्री जीवन का भी विनाश होगा ।

मौसम में बदलाव के कारण फसलें खराब होंगी और इससे कुपोषण जैसे अप्रत्यक्ष प्रभाव भी होंगे । मरुस्थलीकरण से हमें कई बीमारियाँ ग्रस्त करेंगी । कम ऊँचाई वाले क्षेत्रों में बाढ़ और समुद्र स्तर में वृद्धि मानव आवास को नुकसान पहुँचा सकती है ।

भारत के लद्दाख क्षेत्र में ग्लोबल वॉर्मिंग के लक्षण दिखाई देने लगे हैं । यहाँ हिमनदों के पिघलने से पानी की कमी और उसके परिणामस्वरूप जीवन में विषमताएं महसूस होने लगी हैं । इस संदर्भ में भूटान जैसे छोटे देश के प्रयास प्रशंसनीय हैं । यह एकमात्र ऐसा देश है जो कार्बन नेगेटिव है अर्थात इस देश में जितना ऑक्सीजन खर्च होता है उससे अधिक पैदा की जाती है । इस सफलता का श्रेय देश के सत्तर प्रतिशत वन क्षेत्र तथा सात लाख पचास हजार की छोटी आबादी को जाता है । यह केवल छोटी आबादी द्वारा प्राप्त किया गया लक्ष्य नहीं है क्योंकि छोटी आबादी वाले मालदीव,लक्सम्बर्ग जैसे देशों के लिए यह संभव नहीं हो पाया है । इस लक्ष्य की प्राप्ति उनकी कार्य-योजनाएं और नीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन के कारण ही हो सकी है । भूटान राज्य ने पवन बायोगैस और सौरऊर्जा जैसे अक्षय ऊर्जा श्रोतों पर अपनी निर्भरता बढ़ाई और ऐसे कई कदम उठाए जिससे हरे-भरे जंगल बरकार और सुरक्षित रहें ।

हाल ही में ग्लास्गो (Glasgow) में संपन्न COP 26 जलवायु शिखर सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए उपायों पर चर्चा की गई । कई देशों ने कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा को शून्य बनाने के लिए समय-सीमा निर्धारित की । चीन ने इस परिस्थिति अर्थात कार्बन नेगटिव लक्ष्य की प्राप्ति वर्ष 2060 तक करने की बात की । अमरीका और यूरोपीय देशों ने इस लक्ष्य को 2050 तक संभंव बनाने तथा विकासशील देशों को इस कार्य के लिए भारत ने समर्थन देने का भी वचन दिया । इस लक्ष्य को 2070 तक प्राप्त करने का लक्ष्य साधा । इस सम्मेलन में विश्व के राज्यों ने

ग्लोबल वॉर्मिंग को 2 डिग्री से कम करने की वचनबद्धता दोहराई ।

यह मात्र संयोग ही है कि इस सम्मेलन की समाप्ति के एक दिन पहले अर्थात 12 नवंबर 2021 को ब्रिटिश कोलंबिया के डॉक्टर काइल मेरिट (Kyle Meritt) ने एक कनाडाई महिला को जंगल की आग से उत्पन्न गर्म हवा के कारण साँस लेने में कठिनाई के एक मामले को जलवायु परिवर्तन से पीड़ित पहली मरीज बताया ।

के ज्योति,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस को मैं अपना हीरो मानता हूँ । उन्होंने हमारे इस देश को स्वतंत्र कराने में अहम भूमिका निभाई । उनकी कुछ मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं -

- सुभाष चंद्र जी को नेता जी के नाम से भी जाना जाना जाता है ।
- सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन किया था ।
- "तुम मुझे खून दो,मैं तुम्हें आजादी दूंगा" उन्होंने ही हमारे भारत देश के जवानों को यह नारा दिया ।
- सुभाष चंद्र बोस ने "जय हिंद" का नारा दिया था ।
- नेताजी को मरणोपरांत सन 1992 में भारत -रत्न से भी सम्मानित किया गया था ।

श्रीकांत जी
सुपुत्र जयश्री जी कृष्णन, सहायक पर्यवेक्षक

तरणी

तरणी तू ले चल उस पार,जहाँ आधि व्याधि हों कोस हजार
खुशहाली के नित बादल छाएं और प्रेम-भाव की हो बौछार ॥

सदभाव लता हर आँगन में
निशदिन बढ़ती ही जाती हो
कल-कल करती निर्मल धारा
अविरल बहती जाती हो

कुसुम,लता निशदिन झूमे गाएं और प्रकृति करती हो श्रृंगार
तरणी तू.....कोस हजार ॥

हर रात जहाँ चमकीली हो
हर पर्वतमाला बर्फीली हो
चहुँ ओर जहाँ हरियाली हो
हर चेहरे पर खुशहाली हो

चाँद करे रातों को रौशन और सूर्य करे शुभदिन का आगाज ।
तरणी तू.....कोस हजार ॥

कोयल की मधुर आवाज सुनें
गौरैया फिर से नव नीड़ बुनें
बेजान पड़े सब बागानों को
पक्षी फिर से आबाद करें

वात पात से बात करे, जैसे पायल से निकली हो झनकार ।
तरणी तू.....कोस हजार ॥

जहाँ जाति - धर्म का जंजार न हो
कट्टरता का सजता बाजार न हो
पूरब-पश्चिम में कोई अलगाव न हो
उत्तर-दक्षिण में कोई टकराव न हो

स्वस्थ चमन हो,मस्त गगन हो,एकरूपता का हो अधिकार ।
तरणी तू.....कोस हजार ।
खुशहाली .....हो बौछार ॥

राकेश कुमार कर्दम
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मेरी पहली चुनावी ड्यूटी

मार्च 2021 – एक ऐसा समय जब गर्मी के मौसम को मात देते हुए चुनावी सरगर्मी ने केरल को जकड़ लिया था । घर,रास्ते, चौक हर तरफ राजनीति पर ही चर्चा थी । हर सरकारी कर्मचारी के मन में इस बात की आकांशा थी कि उसे किस प्रकार की चुनावी ड्यूटी के लिए तैनात किया जाएगा ।

जल्द ही पोस्टल वोटिंग के मैक्रो ऑब्सर्वर के रूप में मुझे नियत करते हुए आदेश हाथ लग गया । इस चुनाव में 50 साल से अधिक आयु वाले वृद्धजनों,दिव्यांगजनों,कोविड रोग ग्रस्त लोगों को डाक द्वारा वोट करने की सुविधा प्रदान करने का निर्णय निर्वाचन आयोग द्वारा लिया गया था ।

लेखापरीक्षा सेवा में आम जनता से सीधे संपर्क का अवसर कम होने के कारण मेरे मन में इस चुनावी ड्यूटी के निर्वाह के संबंध में काफी आशंकाएं थी । पर दो दिनों के प्रशिक्षण से कुछ हद तक इस आशंका का समाधान हो गया । प्रशिक्षण के बाद, नोडल अधिकारी ने हमारी टीम का गठन किया । हमरी टीम में मेरे अलावा एक प्रिसाईडिंग ऑफीसर तथा एक पोलिंग ऑफीसर थे । चार दिनों के अंदर सौ से अधिक वृद्धों, दिव्यांगजनों तथा कोविड रोगियों के पोस्टल वोट हमें दर्ज करने थे । निर्वाचन क्षेत्र के विविध प्रदेशों में रहने वाले मतदाताओं से मिलने के लिए हमारी टीम ने अपनी यात्रा शुरू की । चार दिनों में मतदान की प्रक्रिया पूरी करने तथा संबंधित कार्य भी पूरा करने में हम सफल हुए । भारत के लोकतंत्र की गहराइयों को छूने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ । भारतीय

समाज की विवधता को समेटने वाले कई घरों में हम गए । आर्थिक एवं शारीरिक कठिनाइयों से जूझने के बावजूद लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने के लिए उत्साह से आगे आने वाली एक जनता को हमने देखा ।

बुढ़ापे की झुर्रियों और कमजोरियों में भी परिश्रांत हुए बिना अपनी थर्राती उंगलियों से मतदान पर्ची पर अपनी आवाज उन्होंने चिह्नित की । मन और शरीर की अवश अवस्था में अपना शिथिल जीवन व्यतीत करने वालों ने भी स्वाभिमान से अपने अधिकार का उत्साह से प्रयोग किया । कोविड महामारी से ग्रस्त होकर चारदीवारी के अंदर फँसे हुए लोगों को भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का अंश बनाने में निर्वाचन आयोग सफल हुआ ।

हमारे देश के लोकतंत्र के मूल्य और उसकी शक्ति से सीधे परिचित होने का अवसर इस ड्यूटी के जरिए मुझे प्राप्त हुआ । समाज के अशक्त एवं कमज़ोर वर्ग माने जाने वाले बूढे, अपंग एवं रोगग्रस्त जनता के जनतांत्रिक अधिकारों के संरक्षण के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा उठाया गया यह कदम अत्यंत सराहनीय है ।

एक शासन व्यवस्था द्वारा अपने अधिकारों का प्रयोग करते समय इस बात का खयाल रखा जाना जरूरी है कि समाज के दरिद्र से दरिद्र या अशक्त से अशक्त के लिए यह किस प्रकार उपयोगी होगी - गांधीजी के इसी उपदेश को ही निर्वाचन आयोग ने इस डाक द्वारा मतदान के माध्यम से कार्यान्वित किया है । मुझे गर्व है कि इस महान उद्यम में मैं साझीदार हो सका ।

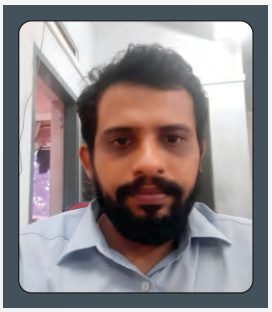

नवीन ए मेनन,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शं नो वरुण:

कुछ यादें खून में अंकित हो जाती हैं जो हमेशा आपके साथ रहती हैं। मेरे नौसेना जीवन की ऐसी ही एक घटना मैं आप सभी के साथ साझा करना चाहता हूं । उन दिनों समुद्री डकैती अपने चरम पर थी, अदन की खाड़ी से गुजरने वाले कई जहाजों का अपहरण समुद्री लुटेरों द्वारा कर लिया जाता था और सोमालियाई तट पर ले जाया जाता था। इन जहाजों को तब ही छोड़ा जाता था जब समुद्री लुटेरों के यूरोपीय देशों में रहने वाले आकाओं द्वारा फिरौती की मांग पर सहमति हो जाती थी । इनमें कई दिनों से लेकर कई सालों तक का समय लग सकता है । इसलिए इन बड़े समुद्री खतरों से रक्षा पाने के लिए कई राष्ट्र इन समुद्री डाकू प्रभावित जल में गश्त करने के लिए सहमत हुए । ऐसा कहा जाता था कि सोमालिया के तटीय शहर में सबसे बड़े घर समुद्री लुटेरों के थे। एक कमजोर सरकार और अल-कायदा के प्रति निष्ठा की शपथ लेने वाले आतंकवादी संगठन अल-शबाब के बीच फंसे देश में पाइरेसी सबसे अधिक मांग वाली नौकरी थी। समुद्री डाकू अब जिन जहाजों को नुकसान पहुँचाते हैं, वही उनके दुख का मुख्य कारण थे। दशकों पहले सोमालियाई तट से गुजरने वाले कई बडे जहाज विनाशकारी तरीके से मछली पकडने और इतना ही नहीं अपने कचरे को डंप करने के लिए इस तट का उपयोग करते थे। इस प्रकार के डंपिंग एवं मछुवारी ने समुद्री जीवियों को नष्ट कर दिया जो इस प्रदेश के लोगों की आय का मुख्य स्रोत था । मछली पकड़ने में लाभ न होने और इस प्रदेश की बंजर भूमि ने कई मछुआरों को समुद्री डकैती की ओर आकर्षित किया । हरेक अपहरण से उनकी तिजोरी भर जाती और कई बार एक ही अपहरण से जीवन भर का जुगाड हो जाता । युवा लड़कियों ने अन्य बेरोजगार सोमालियाई लड़कों की तुलना में समुद्री लुटेरों को प्राथमिकता दी।

अदन की खाड़ी की इस तैनाती को एक सजा माना जाता था क्योंकि लगभग एक से दो महीने के लिए हम बाहरी दुनिया से कट जाते हैं । दोस्तों और परिवार से संपर्क के बिना कई सप्ताह बीत जाते हैं । समाचार पत्र उपलब्ध नहीं थे पर

जहाजों के प्रसारण से महत्वपूर्ण समाचार मिल जाते । मुझे इस प्रकार की लंबी यात्राएं पसंद थी, इसलिए मैं बाकियों के दुख के प्रति उदासीन था । मेरे जैसे युवा मैगी के पैकेटों , सूखे मेवों , चॉकलेट और इससे भी बढ़कर फिल्म सीडी अपने पास स्टॉक करते थे । उन दिनों तेलुगू फिल्में मेरे मेस मेट्स द्वारा बहुत पसंद की जाती थीं, हालांकि हममें से कोई भी आंध्र प्रदेश का रहने वाला नहीं था। इसलिए हमारे पास महेश बाबू, प्रभास, तमन्ना, अनुष्का फिल्म की सीडी थीं।

2008 नवंबर के पहले सप्ताह में मेरे जहाज -आई एन एस टबार - को अदन की खाड़ी में तैनाती के लिए भेजा गया था। हमेशा की तरह हमें प्वाइंट ए से प्वाइंट बी तक जहाजों के एक काफिले का अग्रगमन करने का काम सौंपा गया था । प्रस्थान का अनुमानित समय युक्त ये मिलन स्थल पूर्व निर्धारित हैं, और अदन की खाड़ी से गुजरने वाले सभी जहाजों को इसकी सूचना दी जाती है । पैसेज कोर्स और स्पीड की सूचना इसके बाद काफिले को दी जाती है । काफिले की सबसे धीमे जहाज की गति आमतौर पर काफिले की गति के रूप में तय की जाती है । हमारा जहाज काफिले के जहाजों के साथ संपर्क बनाए रखता है और उनसे किसी भी अप्रिय घटना की रिपोर्ट करने के लिए कहता है । यह पारगमन एक दस्तूर बन गया था । हम रोज कुछ जहाजों को प्वाइंट ए से प्वाइंट बी तक ले जाते हैं । प्वाइंट बी पर पहुंचने पर प्वाइंट ए तक कुछ और जहाजों को ले जाया जाता । ऐसे ही समय बीतता गया, कहने को कुछ हुआ नहीं ।

11 नवंबर को जब हम जहाजों के एक काफिले को एस्कॉर्ट कर रहे थे तो हमें एक सऊदी पंजीकृत जहाज एमवी तिमाहा से एक आपदा कॉल आया। मरीन कमांडो सहित हमारा चेतक हेलीकॉप्टर बचाव के लिए गया और समुद्री लुटेरों के अपहरण के प्रयास को विफल कर दिया गया । 30 मिनट के भीतर हमें भारतीय ध्वजांकित एमवी जग अर्णव का एक और आपदा कॉल आया और कमांडो के साथ हमारे पक्षी ने अपहरण के प्रयास को फिर से सफलतापूर्वक विफल कर दिया। एक सप्ताह के बाद एक और घटना घटी जो अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती रोधी अभियानों के इतिहास में पहली थी। दिन था 19 नवंबर 2008, और मुझे पहरेदारी दोपहर 1300 बजे से 1900 बजे तक करनी थी । हम तीन सदसीय टीम थे और मैं ऑपरेशन रूम का वॉच इंचार्ज हुआ करता था। मैंने अपने सहयोगी जो मेरे बैचमेट भी थे, से पेहरेदारी संभाली । उन्होंने चार्ट पर हमारी स्थिति, हम जिस दिशा में जा रहे हैं, रडार पर संपर्क और सक्रिय सेंसर के बारे में भी बताया । मेरी टीम ने उनके साथ स्थान की अदला-बदली की और अपनी सीटों पर हम बैठ गए । हमारा मुख्य कर्तव्य रडार, CAIO (कंप्यूटर एडेड एक्शन इंफॉर्मेशन ऑर्गनाइजेशन) सिस्टम को मैनेज करना और चार्ट पर जहाजों की स्थिति को प्लॉट करना था । रडार को जहाज की आंख माना जाता है। इसलिए राडार का संचालन करने वाले व्यक्ति को बहुत सतर्क रहना चाहिए । उस दिन समुद्र शांत था, कुछ

ज्यादा नहीं हो रहा था क्योंकि हम अकेले थे । लगभग 1700 बजे रडार के पहरेदार ने एक संपर्क की सूचना दी । मैंने चार्ट पर संपर्क प्लॉट किया और हम यह पता लगा सके कि संपर्क सोमालिया के तट की ओर, शायद सोमालिया के तटीय शहर बोसासो, जो समुद्री लुटेरों का अड्डा था, की ओर जा रहा था । चूंकि यह जानकारी दी गई थी, हमारे कप्तान ने नाव का पीछा करने का फैसला किया ।

जैसे ही हम नाव के करीब आए, हमारे चौकसी अधिकारी (officer of the Watch) ने वीएचएफ संचार के चैनल 16 पर नाव को रुकने का आदेश दिया तथा चालक दल के सदस्यों को डेक पर आने के लिए कहा ताकि हम उनकी जांच कर सकें। नाव नहीं रुकी बल्कि उन्होंने हमारे जहाज को चेतावनी दी कि हम उनका पीछा करना छोड दें वरना वे हम पर गोलियां चला देंगे । तब हमारे कप्तान ने OOW से कहा कि वह मीडियम मशीन गन (एमएमजी) चलाने वाले कर्मियों से चेतावनी शॉट फायर करने के लिए कहें । चेतावनी के गोले दागे गए लेकिन नाव नहीं रुकी और उन्होंने भी हमारे जहाज पर गोलियां चलाईं । तब हमारे कप्तान ने नाव के अग्रभाग की ओर फायर करने का आदेश दिया । गोली लगते ही नाव में जोरदार धमाका हुआ । संभवत: गोलियां नाव के अग्रभाग पर रखे ईंधन कनस्तर पर लगी और उसमें आग लग गई, कुछ ही देर में नाव आग की लपटों में घिर गई । मैं राडार को गौर से देख रहा था और मुझे दो छोटे संपर्क मूल संपर्क से हटते हुए दिखाई दे रहे थे । मैंने इसकी सूचना दी और लुकआउट्स ने पुष्टि की कि दो डोंगियां अलग हो गई हैं । लेकिन हमारा जहाज उनका पीछा नहीं कर सका क्योंकि हम नाव के पूरी तरह से डूबरे से पहले यहां से हट नहीं सकते थे वरना नौवहन को खतरा बना रहता और हम यह भी सुनिश्चित करना चाहते थे कि नाव पर अभी भी कोई जीवित बचा तो नहीं है । हम नाव के पास तब तक रहे जब तक नाव पूरी तरह से डूब नहीं गई । राडार पर हमें एक हवाई संपर्क भी मिला, बाद में जिसका लिंक्स (Lynx) विमान होने की पुष्टि की गई , जिसने एक नाव के डूबने और उसके आसपास भारतीय युद्धपोत की मौजूदगी के संबंध में बाहरी दुनिया को सूचना दी । चारों तरफ खबर फैल गई । घटना के बाद हमारा जहाज नजर से हटना चाहता था, लेकिन तब तक खबर हर कान तक पहुंच गई थी । अदन की खाड़ी में समुद्री डकैती रोधी अभियानों के इतिहास में यह पहली बार था कि एक युद्धपोत ने समुद्री डाकुओं की उस नाव को डूबा दिया था, जिसे समुद्री लुटेरे एक मदर शिप के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे । हमारे द्वारा नाव को डुबाया जाना समुद्री लुटेरों के लिए एक बड़ा झटका था और इसे पूरे समुद्री जगत ने इस खूब सराहा ।

घटना के बाद हमने अपने मिशन को और तीन सप्ताह तक जारी रखा । हम अपनी वापसी पर वीरोचित स्वागत की उम्मीद कर रहे थे, पर तब तक 26/11 की घटन घट चुकी थी और देश इस नीचतापूर्ण हरकत की चपेट में था । इसलिए जब हम अपने होम पोर्ट पर पहुंचे तो हमारे

फ्लीट कमांडर ने ही हमसे मुलाकात की और हमारे प्रयासों की सराहना की । हमारे जहाज का यह सफल मिशन हमेशा मेरी याद में रहेगा जिसे मैं बार-बार स्मरण करना पसंद करता हूं।

जय हिन्द ! शं नो वरुण: !

राजेश सुरेन्द्रन
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जागृति

जीवन ने मुझपर, न उमड़े हैं अंगार,

दुनिया की सीपी में छिपी अद्भुत छटा

दिखाने में निपुण जादुई ऐनकें हैं वह,

सत्य है, दृष्टि सिर्फ आंखों का अनुभव नहीं है,

बल्कि आत्मा में खिले कमल पुष्प हैं वह,

तिक्त अनुभव-

इसकी जड़ों को जमाने के पोषक पंक मात्र .....

वी एम मंजू
सहायक पर्यवेक्षक

सुंदरता केवल देखने वाले की आंखों में नहीं होती है ।

सुंदरता देखने वाले की आंखों में होती है- 'Beauty lies in the eye of the beholder- यह ग्रीस के दार्शनिक प्लैटो के एक "dialogue" की संक्षिप्ति मानी जाती है । सदियों से यह कहावत विभिन्न रूपों में मौजूद थी । शेक्सपियर ने भी इसे इसी अर्थ में प्रयोग किया, पर शब्द अलग थे । आधुनिक अंग्रेजी में इस कहावत को इसी रूप में मार्ग्रेरेट वुल्फ हंगरुफोर्ड ने अपने 'मॉली बॉन' नामक रोमेंटिक कॉमेडि नोवल में प्रयोग किया था तथा वहीं से यह काफी प्रचार मे आ गई । हिन्दी में यह कहावत अंग्रेजी से अनुदित की गई ।

सच में इस कहावत या प्रयोग का अर्थ क्या है ?

यह कहावत इस तथ्य पर रोशनी डालता है कि सुंदरता क्या है, इसपर सभी लोग समान विचार नहीं रखते हैं । अभिप्राय यह है कि जो एक व्यक्ति को सुंदर लगे वह दूसरे को भी सुंदर या आकर्षक लगे, यह ज़रूरी नहीं है ।

मनुष्य कब सुंदर बनता है - यह सवाल भी उठता है ।

यह कहा जाता है कि त्वचा ही सुंदरता है । पर मुझे लगता है -आप भी मुझसे सहमत होंगें जब मै यह कहूं कि-जब आप किसी आकर्षक व्यक्ति का वर्णन करते हैं तो 1. सकारात्मकता 2 आत्मविश्वास 3. दयालुता 4. मिजाज 5. गरिमा और बुद्धि 6. शिष्टता -इन सभी विशेषताओं को भी आप ध्यान में रखते हैं । ये वह विशेषताएं हैं जो एक व्यक्ति को किसी की नजर में सुंदर बनाते हैं । एक व्यक्ति का सुंदर या सौंदर्यवान होना दूसरों के साथ उसके व्यवहार, उसकी विनीत छवि, दूसरों की मदद करने में उसकी तत्परता और समाज की तरफ उसका रवैया –इन बातों पर निर्भर करता है ।

सौंदर्य के बारे में एक बात यह भी कही जाती है कि सुंदरता या सौंदर्य देखने वाले की आंखों में नहीं होती- वह निष्पक्ष या वस्तुपरक होती है ।

यह विशेष रहस्य नहीं है कि मनुष्य का सौंदर्यबोध मनभावन चीजों को देखने में उसे आनंद प्रदान करता है, चाहे वह कला हो, प्रकृति हो या अन्य लोग हों । हम उस चीज को देखते हैं जो हमारी आंखों को भाता है, चाहे वह कुछ भी हो, और एक पल में उसकी सुंदरता स्पष्ट हो जाती है तथा हमारी आंखें उसी तरफ खिंच जाती है । चाहे हमारी आंखें किसी वस्तु को कैसे भी देखें, उदाहरणत: किसी विशेष पेंटिंग या किसी विशेष व्यक्ति को, हम उसके सौंदर्यशास्त्र की वास्तविकता को बदल नहीं सकते हैं ।

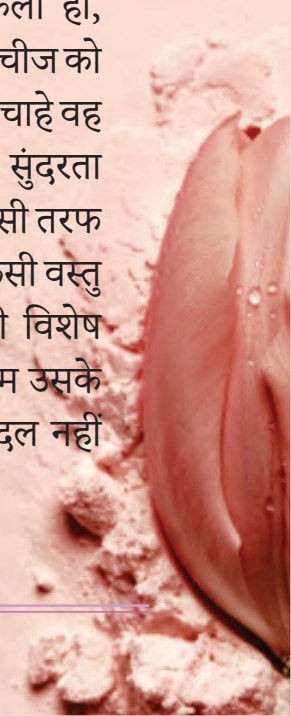

सौंदर्यशास्त्र की नैतिक आवश्यकता यह समझना है कि एक वस्तु जो है , वह वही है , और हम उसे वह नहीं बना सकते हैं जो हम उसे बनाना चाहते हैं । हमें सबसे बडा झूठ यह सिखाया गया है कि सुंदरता देखने वाले की आंखों में होती है । सुंदरता जीवन का सार्वभौमिक पहलू है । एक चित्र सुंदरता का अनुभव प्रदान करती है, चाहे कोई व्यक्ति उसे सुंदर माने या न माने । एक पुरुष या स्त्री सुंदर ही है, दूसरे पुरुषों या स्त्रियों की राय चाहे जो भी हो ।

यह कहावत कि सुंदरता देखने वाले की आंखों में होती है- आला दर्जे की ईर्ष्या से उत्पन्न है । जब एक व्यक्ति किसी चित्र को देखता है, उसको उसके डिजाइन की सुंदरता का आभास होता है, पर वह उसे बदसूरत कहना पसंद करता है क्योंकि या तो वह इतना सुंदर चित्र बनाने में असफल है या वह चित्रकार की उपलब्धियों के प्रति व्यक्तिगत रूप से वैमनस्य रखता है ।

सौंदर्य एक वस्तुपरक मानक है, पर व्यक्ति किस प्रकार इसे महसूस करता है, वह व्यक्तिपरक है तथा उस व्यक्ति की अक्षमता व दमन की धारणा से निदेशित है । अत: सौंदर्य वह है जो किसी के अंगीकार के बिना ही विद्यमान है ।

व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए सौंदर्य वह है जो मेरी आंखों को ही नहीं, मेरे अंतरंग को भी पुलकित करता है । सच्ची खूबसूरती वह है जो हमें आंखों की अनुभूति के परे ले जाती है ।

शोभा बी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

भावना

आखिर कौन हूं मैं ?
कभी खुश, कभी दुखी ,
कभी निराशा, कभी प्रसन्न
कभी चिंतित, कभी चकित,
कभी दयालु, कभी अनदेखा
कभी साहसी तो कभी बुजदिल ....
मैं ही तो हूँ,
जो माँ की ममता और पिता का प्यार महसूस कराने की शक्ति दूं,
बच्चों की हार जीत में माँ –बाप को खुश होने का अवसर दूं ,
और दूं उनकी विफलता के दुख का अभाव,
यारों की यारी और दोस्तों की दिल्लगी पे जान न्योच्छावर करने को आतुर बना दूं,
यारों की हर निराशा को आशा में बदल देने की कोशिश
और दिल में प्रसन्न कर जाने का वह जरिया हूं मैं ।
देर घर आने पे, माँ का वह चिंता करना,
40 वर्ष बाद भारत को हॉकी में कांस्य पदक मिलने पर भारत वासियों की खुशी से चकित रह जाना ....
पेड-पौधे, पशु –पक्षी के लिए दया का भाव प्रदान करने वाला...
मुश्किल घडी में बुजदिल को साहस का भाव प्रदान कर
कठिनाइयों से लडने की शक्ति दूं, वह निशानी हूं मैं ।

विनीता कुमारी साह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

खुलकर जीने की चाह

मास्क पहनो, दूरी बनाए रखो, साबुन से हाथ धोओ । अब इन सब बातों से ऊब सी हो गई है । दिल करता है कि एक मुस्कुराता चेहरा देखूं, भावों को चेहरे पर उमडता देखूं । शुद्ध हवा में सांस लूं और अपनी ही गरम सांसों के बदले फेफडों में स्वच्छ हवा भर लूं ।

सब कहते थे, अच्छे दिन आएंगें, पर अब तो जिन दिनों को हम पहले बुरा मानते थे, वे भी अच्छे लगने लगे हैं । लॉकडाउन से लॉकडाउन तक जिन्दगी सिमटकर रह गई है ।

सोचा करता था, कि 12 साल की पढ़ाई के बाद कॉलज का मस्त समय मेरी जिन्दगी में भी आएगा । पर कॉलज में पैर पसारने से पहले ही लॉकडाउन आ गया । न दोस्त, न मस्ती , न मजा । कॉलेज लाइफ, जैसा अपने सीनियर्स से सुना था, बस सपना बनकर रह गया ।कक्षाएं तो चली, पर जिन्दगी का लुत्फ उठाने का मौका नहीं मिला ।

स्कूलों में पहली बार कदम रखने के लिए उत्साहित बच्चे, अब मोबाइल और लैपटॉप लेकर बैठें हैं । उनकी जिन्दगियों में भी न दोस्त है, न खेल है और न ही है हंसी मजाक । दोस्तों की जगह टीवी, मोबाडल और लैपटॉप ने ले ली है । मोटापे से ग्रस्त अस्वस्थ बच्चे, अब तो क्यूट भी नहीं लगते हैं । इन्स्टा, वाट्सऐप और फेसबुक ने जिन्दगी की जगह ले ली है ।

धूम-धाम, शोर-शराबा न शादियों में रह गए हैं, न थियेटरों में । पडोसी आपस में मिलते तो हैं, पर पास जाने से कतराते हैं, कि कहीं पडोस से घर में कोविड न आ जाए । नए पडोसी तो आए हैं, उन्हें हम जानते भी हैं, पर मास्क के बिना मिल गए तो पहचान नहीं पाते हैं, क्योंकि हमने उनका चेहरा मास्क के बिना देखा ही नहीं है ।

दिल करता है, कि अब तोड दूं इस पिंजरे को ।भाग जाऊं कहीं दूर, एक ऐसी दुनिया में जहां न कोविड है, न प्रदूषण । बस हैं, आपस में भाईचारे और खुशी से रहने वाले लोग ।पर दिल कहता है, कुछ और सब्र करो, this too will pass.....

उदित एस
सुपुत्र सिन्धु नायर, हिन्दी अधिकारी

पेड़ हमारे सच्चे साथी

हमारी धरती पर पेड़ जीवन के सबसे मूल्यवान और महत्वपूर्ण साधन हैं । पेड़ धरती पर हमें और सभी प्रकार के जीव-जन्तुओं को बहुत कुछ प्रदान करते हैं । व्यावसायिक और स्वास्थ्य से जुड़े समुदायों के लिए तो ये किसी वरदान से कम नहीं होते हैं,क्योंकि व्यावसायिक लोगों को ये लकड़ी और कोयला आदि प्रदान करते हैं तो वहीं ये स्वास्थ्य से जुड़े लोगों के लिए जीविकोपार्जन के स्रोत हैं । हमारी आयुर्वेदिक चिकित्या पद्धति तो अनेकों प्रकार की जड़ी – बूटियों एवं विशेष गुणों वाले पेड़ों पर निर्भर करती है तो वहीं कागज,फर्नीचर आदि से जुड़े व्यवसाय भी इन पेड़ों पर ही निर्भर हैं । कुछ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीके से ये धरती पर वास करने वाले जीव – जन्तुओं को भी फायदा पहुँचाने का कार्य करते हैं । हमारी पृथ्वी पर सब कुछ एक –दूसरे से किसी न किसी प्रकार से जुड़ा हुआ है और इसी से इसका संतुलन भी बना हुआ है अगर इनमें से कोई एक अधिक बाधित होता है तो प्रकृति का संतुलन बिगड़ सकता है,हमारा पर्यावरण भी खतरे में पड़ सकता है तथा पृथ्वी पर जन -जीवन को वहुत भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है ।

पेड़ हमें बहुत सारी आपदाओं से बचाते हैं, अनेक प्रकार से हमारे जीवन का पलन-पोषण भी करते हैं । ये हमारे पर्यावरण को स्वच्छ और हमारी पृथ्वा को हरी-भरी रखते हैं इसीलिए हम भी इनके प्रति पूरे जिम्मेदार बनें तथा इनको बचाने के लिए अपना सबसे बेहतर प्रयास करें । वो पेड़ ही तो हैं जो हमें जीवित रहने के लिए अमूल्य आक्सीजन प्रदान करते हैं । छोटे पेड़ों की अपेक्षा अधिक लंबे व परिपक्व पेड़ अधिक लाभदायक होते हैं चूँकि वे छोटे पेड़ों की तुलना में अधिक कार्बन डाई-ऑक्साइड सोखने में सक्षम होते हैं तथा हमें घनी छाया भी प्रदान करते हैं । इसलिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने पर जोर देना चाहिए न कि इनका कटान करने पर ।

पेड़ हमारी पृथ्वी पर जीवन को एक संतुलन प्रदान करते हैं । मानव जाति को ये छाया,ऑक्सीजन,औषधियाँ,कागज तथा घर के साजो – सामान के लिए लकड़ी तो प्रदान करते ही

हैं अपितु शाकाहारी जानवरों के लिए भी ये उनके भोजन का मुख्य स्रोत होते हैं तथा उनको भी सूर्य की तपती धूप से अपनी छाँव देकर बचाने का कार्य करते हैं और अन्य कई प्रकार से उनके लिए बहुत ही उपयोगी होते हैं । पेड़ हवा को शुद्ध करने के साथ-साथ ग्रीन हाउस गैसों को भी सोखने का कार्य करते हैं तथा जलवयु परिवर्तन में संतुलन बनाए रखने में मददगार होते हैं,ये जलवायु परिवर्तन के मुख्य स्रोत भी हैं ।

कहा जाता है कि एक पेड़ 18 से 24 तक की संख्या में व्यक्तियों को ऑक्सीजन प्रदान करता है,इस तरह से ये हमें पृथ्वी पर जीवित रहने के लिए ऑक्यीजन के रूप में सबसे बहुमूल्य चीज प्रदान करते हैं । पेड़ों से हमें कोयला भी प्राप्त होतो है जिसे हम ईंधन के रूप में प्रयोग में लाते हैं । पेड़ मृदा अपरदन को रोकने में भी अपनी भूमिका निभाते हैं । पेड़ वर्षा कराने में भी सबसे महत्वपूर्ण कारक होते हैं । पेड़ हमारे लिए फल, सब्जी आदि भी उपलब्ध कराते हैं । ये हमारी अर्थव्यवस्था के अच्छे साधन भी हैं । पेड़ जल प्रदूषण,वायु प्रदूषण तथा मृदा प्रदूषण को भी कम करने में सहायक होते हैं ।

अत: कहा जाए कि पेड़ इस पृथ्वी पर हमारे सबसे अच्छे और सच्चे साथी हैं तो अनुचित नहीं होगा ।ये मानव जीवन और प्रकृति के बीच संतुलन बनाने का कार्य करते हैं और हम मानवों को अनेक प्रकार से लाभ पहुँचाते हैं । लेकिन आज का मानव अति स्वार्थी होता जा रहा है और केवल वर्तमान लाभ की ओर ही देख रहा है ,इसी निजी लाभ हेतु वह बड़ी मात्रा में जंगलों की कटाई करता जा रहा है और आने वाली पीढ़ी के लिए होने वाले नुकसान को भी नजरअंदाज कर रहा है । हम चाहे जितना अपने आप को ए.सी.,कूलर व आधुनिक पंखों में तरोताजा कर लें लेकिन असल में शुद्ध हवा केवल और केवल हमें इन पेड़ों से ही प्राप्त होती है । हमें आज केवल अपने वर्तमान को ही ध्यान में रखकर नहीं चलना है बल्कि आने वाले समय को भी ध्यान में रखना है । अत: हममें से प्रत्येक की जिम्मेदारी बनती है कि अपने सुनहरे कल के लिए इस पेड़ रूपी प्राकृतिक खजाने को कायम रखना है तथा वृक्षारोपण की ओर उन्मुख रहना है तथा दूसरों को भी इसके प्रति जागरुक बनाना है तभी हमारी आने वाली पीढ़ी भी अपने आप को सुरक्षित महसूस कर सकेगी ।

राकेश कुमार कर्दम
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

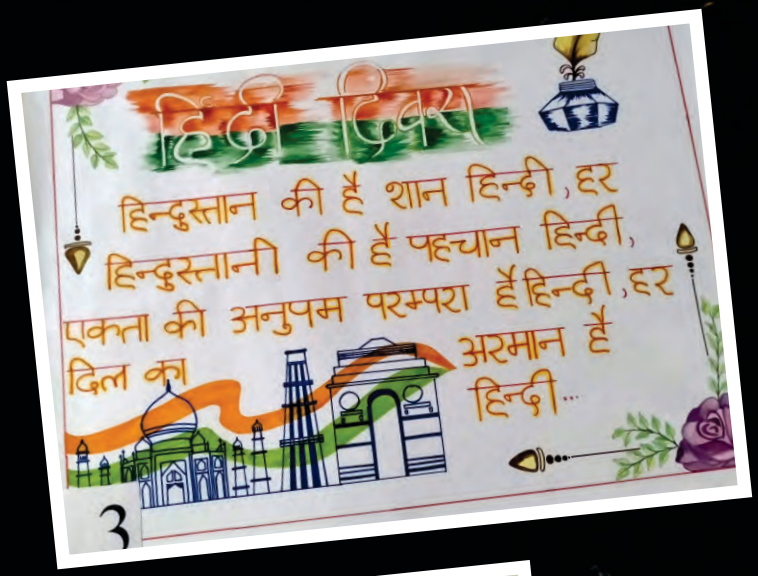
हिंदी दिवस
हिन्दुस्तान की है शान हिन्दी, हर
हिन्दुस्तानी की है पहचान हिन्दी,
एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी, हर
दिल का अरमान है
हिन्दी...
3

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की
एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
- महात्मा गांधी

हिंदी
राष्ट्रीय
एकता
का
प्रतीक है
2021
डॉ. सपूर्णानंद
4

हिन्दी
राजभाषा

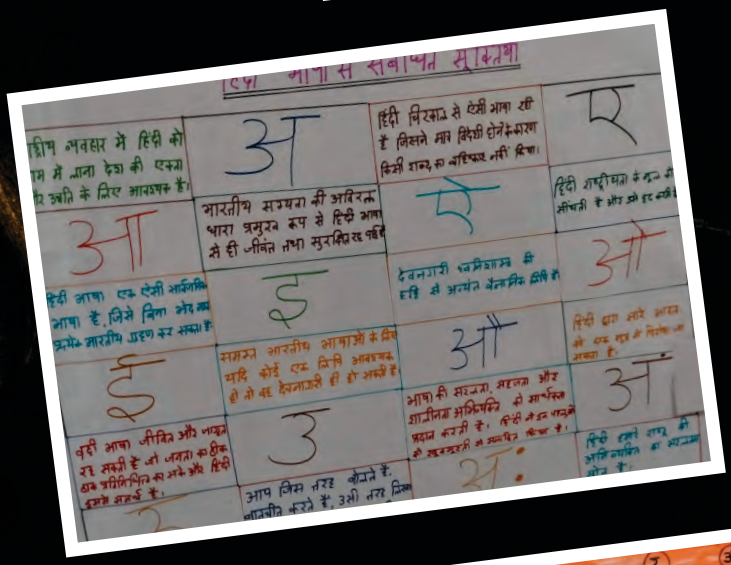

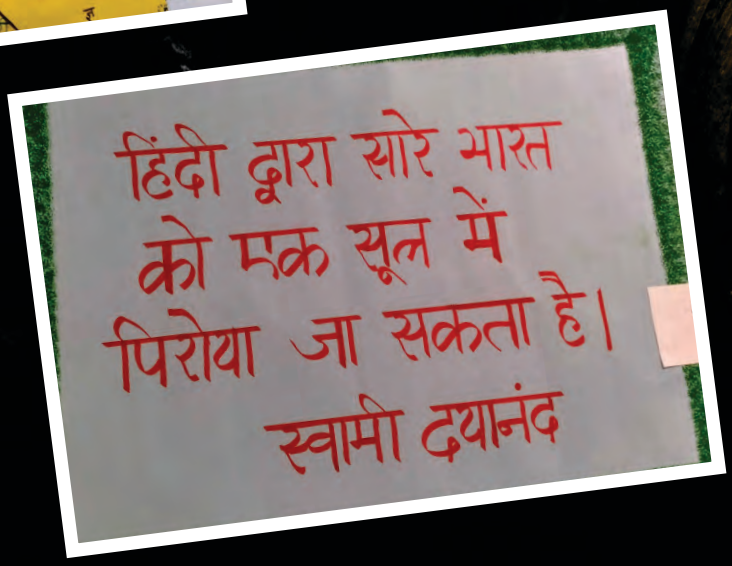
हिंदी द्वारा सारे भारत
को एक सूत्र में
पिरोया जा सकता है।
स्वामी दयानंद

हिन्दी
दिवस
"हम सब का अभिमान है हिन्दी
भारत की शान है हिन्दी"

हिन्दी सप्ताह -2021- रिपोर्ट

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केन्द्रीय) का कार्यालय,चेन्नै, शाखा कार्यालय - कोच्ची द्वारा दिनांक 14.09.2021 से 20.09.2021 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया । कोविड-19 के कारण दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन समारोह नहीं किया गया तथा कर्मचारियों द्वारा हिंदी दिवस कार्यालय प्रांगण के बजाय संबंधित अनुभागों में रहकर ही मनाया गया ।

दिनांक 14.09.2021 (हिंदी दिवस) को सभी अनुभागों के प्रभारी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारियों/ /पर्यवेक्षकों द्वारा अपने नियंत्रणाधीन अनुभाग में कर्मचारियों को राजभाषा विभाग द्वारा अग्रेषित राजभाषा प्रतिज्ञा ग्रहण करवाई गई । हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्रि श्री अमित शाह जी द्वारा दिया गया संदेश भी ई-मेल के माद्यम से सभी अनुभागों को भेजा गया ।

हिन्दी सप्ताह के दौरान कार्यालय के कर्मचारियों के लिए हिन्दी सुगम-संगीत, हिंदी भाषा संबंधी सूक्तियों का प्रयोग करते हुए पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता एवं सुलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई । कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बड़े ही उत्साह के साथ और बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा सुगम-संगीत एवं पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन भी किया । हिन्दी सप्ताह का समापन 20 सितंबर 2021 को किया गया तथा कोविड-19 के प्रसार को ध्यान में रखते हुए इस अवसर पर कोई कार्यक्रम आयोजित नहीं किया गया ।

इस वर्ष हिंदी सप्ताह में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार की राशि सीधे उनके बैंक खाते में भेजी गई । मूल्यांकन समिति द्वारा भारत सरकार, गृह मंत्रालय की प्रोत्साहन योजना के अधीन हिन्दी में उत्तम कार्य करने के लिए प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार हेतु चयनित तीन विजेताओं तथा अंत: कार्यालयीन प्रोत्साहन योजना के अधीन हिन्दी में उचित कार्य करने के लिए दो विजेताओं के नाम की घोषणा की गई । वर्ष 2020-21 के दौरान हिन्दी में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए आई टी आर ए अनुभाग को चल वैजयंति से सम्मानित किया गया ।

प्रशासनिक शब्दावली-
वाक्यांश एवं अभ्युक्तियां

At the instance of	की प्रेरणा से, के कहने पर, के अनुरोध से
Take into account	हिसाब मे लेना
Actually due and payable	वस्तुत: शोध्य और देय
After consultation with	से परामर्श करके
As a matter of fact	वस्तुत:, याथार्थत: , वास्तव में
As a whole	समग्र, सारा का सारा
Beyond the scope of	की परिधि के वाहर
In black and white	लिखित में
Breach of agreement	करार भंग
Broad perspective	स्थूल परिप्रेक्ष्य
By virtue of	के नाते, की हैसियत से
In collaboration with	के साथ मिलकर
It shall be construed	यह समझा जाएगा कि
Documentary proof	लिखित प्रमाण
On due date	देय/नियत तिथि को
Whichever is earlier	जो भी पहले हो
Enter into contract	संविदा करना
It is quite evident	यह बिलकुल स्पष्ट है

Final decision	अंतिम निर्णय
For and on behalf of	के लिए
For the time being	संप्रति, फिलहाल
Future goods	भावी माल, आगाऊ माल
Henceforth	आगे से
In compliance with	के अनुपालन में , का पालन करते हुए
In exercise of	का प्रयोग करते हुए
In keeping with	के अनुरूप, को ध्यान में रखते हुए
In perpetuity	साश्वत, सदा के लिए
In toto	पूर्णत: , पूरी तरह से
In the first instance	प्रथमत:, पहले तो
In the light of	को ध्यान में रखते हुए, के परिप्रेक्ष्य में
In the prescribed manner	निर्धारित रीति से, विहित
In partial modification of	के आंशिक संशोधन में
Not exceeding	से अनधिक, से अधिक नहीं, अधिक से अधिक.....तक
Not later than	.....तारीख के बाद नहीं , ...तारीख से पहले
Not more than	.....से अधिक नहीं
Nil and void	अकृत और शून्य, प्रभावहीन, वातिल और शून्य

Of no avail	व्यर्थ, निष्फल
In official capacity	आधिकारिक /सरकारी हैसियत से
On the grounds that	के आधार पर कि
On the part of	के हक में , की ओर से
On these points	इन विषयों पर, इन मुद्दों पर
With full particulars	पूरे ब्यौरों के साथ / सहित
In several parts	कई भागों में
Previous and later references	पिछले एवं बाद के संदर्भ
Rescind the contract	ठेका/संविदा को विखण्डित करना
Review	समीक्षा
With retrospective effect	पूर्वव्यापि प्रभाव से
Repudiation of contract	ठेके /संविदा को स्वीकार करना

किताबों की मोहक दुनिया

किताबों और अक्षरों से मेरा रिशता उसी दिन शुरू हो गया था जिस दिन पहली बार पहली कक्षा में लाईब्रेरी पीरियड में टीचर द्वारा लाई गई 'स्नोवाइट एंड द सेवन ड्वार्फस' नामक किताब को मैने हाथों से छुआ था । उसके नरम, मुलायम, चमकीले पन्नों और रंग-बिरंगी तस्वीरों ने मेरा मन मोह लिया । तब मुझे पढ़ना नहीं आता था । बस तस्वीरें देखकर ही खुश हो जाती और उनसे कहानी का अंदाजा लगाने की कोशिश करती । हर हफ्ते टीचर आती और इस तरह कई किताबें हमें पकडातीं । किसी एक किताब की कहानी हमें सुनातीं । हम बच्चे मुग्ध होकर राजकुमारियों, राजकुमारों, उडने वाले घोडों और बातूनी जानवरों की जादुई दुनिया में खो जाते । सुनते-सुनते कहानी खुद पढ़ने के चाह जागी, तो इन किताबों को खुद पढ़ने के लिए अक्षरों को जोड-जोडकर पढ़ना सीखा । तीसरी कक्षा तक मेरी अंग्रेजी पढ़ने और समझने की क्षमता अपने सहपाठियों से कहीं अच्छी थी । पढ़ने का शौक तो था, पर उस समय घर पर किताबें खरीदने का संप्रदाय नहीं था । इसलिया पढ़ी हुई कहानियों बार-बार पढ़ी जातीं । मुझे याद है कि नई कक्षा के शुरुवात में जब नई स्कूली किताबें खरीदी जातीं तो मै काफी उत्साहित हुआ करती थी । हिन्दी और अंग्रेजी की पाठ-पुस्तकों की साहित्यिक रचनाएं मै दो दिन में ही पढ़कर पूरा कर लेती । कई बार टीचर के पढ़ाने से पहले ही कविताएं रट लेती । साहित्य के साथ मुझे इतिहास में भी रुची थी, तो इतिहास की किताबें भी मै पढ़ लिया करती थी । पर गणित और साईंस की किताबों को मैने सर्वदा अनदेखा किया ।

तीसरी कक्षा पूरी होते ही मेरे पिताजी का तबादला लखनउ हो गया । तब तक हम सिकंदराबाद में थे । लखनउ में मैं जिस स्कूल में गई वहां न लाइब्रेरी और न हि कोई अच्छी भाषा टीचर । ऐसे में मैं, पापा को अमर चित्र कथा लाने के लिए परेशान किया करती और कभी-कबार यह नसीब भी होता । पिताजी ने मेरी पढ़ने की चाह को अपनी सीमित आमदनी के बावजूद प्रोत्साहित किया । समाचार पत्र तो घर में मंगवाया ही जाता था, और उस जमाने में इनमें बच्चों के लिए खास सेक्शन भी हुआ करता था । मम्मी भी पढ़ने की शौकीन थी, तो मलयालम पत्रिकाएं घर में मंगवाई जाती थी । मलयालम पढ़ना नहीं आता था, तो मम्मी को भी परेशान करके इसमें आने वाले कार्टून और चुटकुले भी पढवाती थी ।

मेरी पांचवीं कक्षा समाप्त होते ही पिताजी का तबादला नागालैंड में हो गया । पिताजी सैनिक थे । उस समय नागालैंड का महौल परिवार के साथ रहने के लिए अनुकूल नहीं था। पिताजी हमें केरल में दादा-दादी के घर छोड गए । यहां पर मैं जिस स्कूल में पढ़ी, उसी को मैं अपने जीवन का सबसे बेहतरीन समय मानती हूं । यहां की लाइब्रेरी बहुत अच्छी थी और लाइब्रेरियन पढने वाले बच्चों को बहुत प्रोत्साहित करती थीं । क्योंकि मैं उत्तर भारत से आई थी, मातृभाषा होने के बावजूद मुझे मलयालम बोलने और समझने में कठिनाई आती थी । उस समय हिन्दी को मिस करती, और हर हफ्ते 'नंदन' (एक बच्चों की हिन्दी पत्रिका) लाइब्रेरी जाकर पढ़ा करती । प्रकृति से संकोची होने के कारण दोस्त बनाना मेरे लिए मुश्किल था । किताबों की दुनिया में खोकर अपने अकेलेपन से जूझती । 'फेमस फाइव', 'हार्डीबोयस', 'नैन्सी ड्रू' इनकी दुनिया मुझे जकड लेती । एनिड ब्लिटन मेरी चहेती लेखिका थी । अपने बचपन के इन लेखकों को पढ़ते-पढते मैने टीनेज में कदम रखा । आठवीं कक्षा तक आते आते मैं साहित्यिक रचनाओं में तत्पर होने लगी । इस दौरान मेरा परिचय डिकेन्स, जेन ऑस्टन, आर्थर कोनेन डॉयल, शार्लट ब्रोन्टे, एमिली ब्रोन्टे आदि साहित्याकारों से हुआ । 'ओलिवर ट्विस्ट', 'टेल ऑफ टू सिटीज', 'डेविड कोप्परफील्ड', 'वुतरिंग हाईट्स', 'शरलॉक होम्स' इत्यादि रचनाओं ने मेरा मन जीत लिया । आगे कई और स्कूल आए , पर तब तक स्कूल की लाइब्रेरी को खोज निकालने की कला भी मुझे आ गई थी । मेरे स्कूली जीवन में शायद ही कोई ऐसा हफ्ता गुजरा हो जब मैने कोई किताब न पढी हो । वहां से आज तक किताबों ने मेरा बहुत साथ दिया है । मेरे जीवन के हर मुकाम में ये मेरे साथ थे । असंख्य किताबें मैने पढ़ डालीं । अक्षरों और भाषा के साथ जो रिश्ता जोडा था, उसने मुझे स्नातक स्तर पर अंग्रेजी साहित्य पढ़ने की प्रेरणा दी । दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, ब्रिटिश कौन्सिल लाइब्रेरी, अमेरिकन सेंटर लाइब्रेरी जा-जा कर मैने किताबें पढ़ीं । किताबों ने जीवन के हर मोड पर मुझे सहारा दिया । मेरे जीवन में जो भी अनुभव है, जो भी अच्छा है, वह किताबों की ही देन है । आज, जब मेरा काम ही अक्षरों और भाषा से जुडा हुआ है, तो मै किताबें पढ़ने की अपनी आदत को ही इसका श्रेय देना चाहूंगी । इस आदत से ही भाषा की गहराईयों का अनुभव करने , उसका विवेचन करने, उसके स्वाभाविक प्रवाह को समझने की क्षमता मुझे मिली । किताबों की मोहक दुनिया ने मेरी दुनिया आबाद कर दी ।

सिन्धु नायर
हिन्दी अधिकारी

एहसास

हम सबकी जिंदगी में जब हम पलटकर अपना बचपन देखेंगे तो एक चीज़ हम सबको सामान सी लगेगी । माता-पिता की वही अच्छी पुरानी सलाहें । बहुत कुछ सीखने को मिला । अच्छाई- बुराई में भेद करना सीखा । सीखने का वह सफर आसान नहीं था। बहुत सी चीज़े ऐसे थी जो माता-पिता से प्रभावित होकर सीखा । उठना, बैठना, खाना, पीना, वस्त्र धारण, कैसे दूसरों से बातें करें और न जाने ऐसे बहुत सी चीज़े माता-पिता को करते हुए देखकर ही सीखा है । लेकिन कुछ ऐसी भी बातें थी जो लाठियों के बल सीखा । खेल- कूद और पढ़ाई को सामान महत्व देने की सलाह पहले तो बड़े प्यार से मिला । खेल-कूद का महत्त्व पूरे मन से स्वीकार किया । क्या करे, मन तो उसी में लगता था । पढ़ाई का महत्व लाठियों से सीखना पड़ा । मासूम सी उम्र में ये कभी नहीं समझ पाया की हाथ में लाठी पकड़कर भी प्यार दिखाया जा सकता है ।

लेकिन एक वक़्त ऐसे आया की माता-पिता ने लाठी छोड़ दी। शायद उन्हें लगा होगा कि भले ही लाठी टूट जाए लेकिन लड़का सुधरने नहीं वाला । या फिर उन्हें लगा होगा कि लड़का मज़बूत बन गया है और न जाने वापस हमला ही कर दे । जो भी हो, वक़्त बदलने के साथ-साथ पुराने तरीके भी बदल गए । अब तक मैं दसवीं कक्षा में हो चूका था । प्रेरक शब्दों ने लाठियों की जगह ले ली थी । मुझे बताया गया की ज़िन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ दसवीं कक्षा हैं । बस दसवीं कक्षा मेहनत करके अच्छे से पास कर लो

और आगे का सफर आसान रहेगा । जैसे बोला गया मैने वैसे ही किया । आगे का आसान सफर सपना देखकर मैं बैठा ग्यारहवीं कक्षा में पहुँचा । ये एहसास हुआ की दसवीं के पाठ-पुस्तकों से ज़्यादा नए पाठ-पुस्तक सता रहे हैं । ज़िन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ अब बारहवीं कक्षा के रूप में उभर आया । मुझे बताया गया की बस बारहवीं कक्षा मेहनत करके अच्छे से पास कर लूं तो आगे का सफर आसान रहेगा। आगे जाते जाते इंजीनियरिंग एंट्रेंस , महाविद्यालय शिक्षा, नौकरी ऐसे कई मोड़ आए जो सबसे महत्वपूर्ण मोड़ बनकर निकल गए।

आज मैं भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग मैं काम करता हूँ। मन मैं शांति हैं। अब कोई महत्वपूर्ण मोड़ नहीं सतायेगा । लेकिन नहीं । मैं गलत निकला । अब मुझे बताया जा रहा है की एस ए एस की परीक्षा ज़िन्दगी का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ है । बस एस ए एस परीक्षा मेहनत करके अच्छे से पास करो और आगे का सफर आसान रहेगा । क्या इसका कोई अंत है ? सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों को भी किसी न किसी परीक्षा के लिए पढ़ते देखकर मुझे यह एहसास हो रहा है कि ज़िन्दगी का हर एक दिन महत्वपूर्ण मोड़ है । यह भी एहसास हो गया है कि ज़िन्दगी के हर एक मोड़ को, हर एक पल को ख़ुशी से स्वीकार करने में ही मेरी भलाई है ।

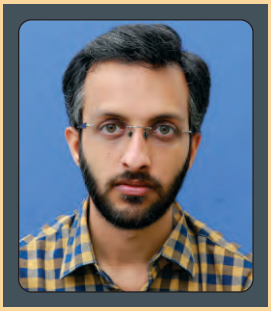

रघुराम वारियर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हिन्दी सप्ताह -2021

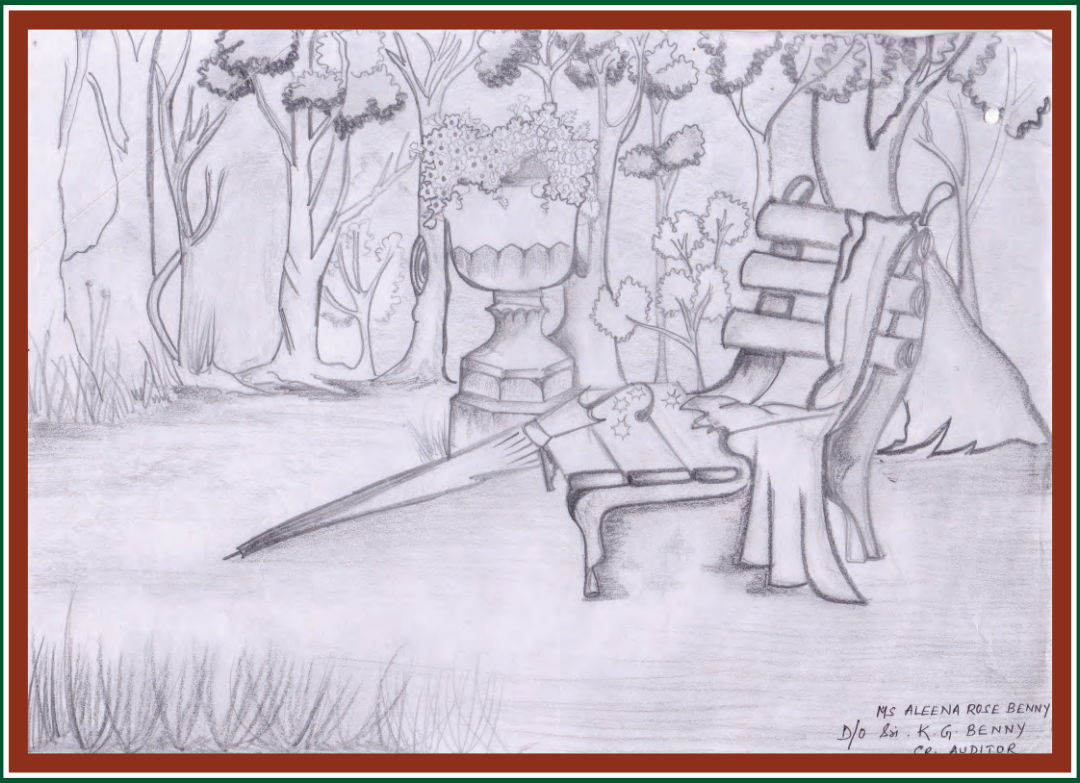

भावना

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै,
शाखा कोच्ची की वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका